कहीं समस्याओं का कारण हम स्वयं तो नहीं...!!!

आज मनुष्य अपने जीवन में ऐसे मोड़ पर जी रहा है जहाँ हर पल समस्याओं और विपरीत परिस्थितियों से उसका सामना होता है। हम जब स्वयं के ऊपर नज़र करें या इंट्रोस्पेक्ट करें तो ये समझ में आता कि कहीं हम ही तो इसके जन्मदाता नहीं! कहीं मेरी वजह से ही मुझे चोट तो नहीं पहुंच रही है!

सबसे सूक्ष्म किंतु हमारे सोच और रहन-सहन में ऐसा सूक्ष्म रूप लेकर घुलमिल गया है जो हमें पता ही नहीं चलता कि मैं समस्या से क्यों जूझ रहा हूँ। ऐसे में जब स्व पर नज़र डालते, गौर करते हैं तो पता चलता है कि दुःख, अशांति, समस्याएं और कुछ नहीं, 'मैं' और 'मेरापन' है। मैं-पन आया और हमारी शांति विचलित हुई। तो देखें, मैं-पन से क्या-क्या होता है? मैं-पन ऐसे तो नज़र में नहीं आता, उसका ऊपरी रूप लुभावना जैसा है, लेकिन उसको लेबोरेट्री में जैसे खून की चेकिंग करते हैं तो कैंसर के सूक्ष्म किटाणु का पता चलता है, उसी तरह हम सूक्ष्मता से अपने आप का अवलोकन करते हैं तो पता चलता है कि मैं-पन का

ब्र.कु. गंगाधर

भाव ही दुःख का कारण बनता है। मैं-पन आने से व्यवहार और सेवाओं में दिव्यता का गुलदस्ता मुरझाने लगता है। टकराव होने लगता है। हमारी जो दिव्यता है, दिव्यता की रौनक है वो खत्म होने लगती है। सूक्ष्मता के लेंस से देखने पर हमारे और परमात्म शक्ति के बीच में एक दीवार-सी खड़ी दिखाई देती है। इसीलिए परमात्मा हमारे द्वारा जो कार्य कराना चाहता है, वो नहीं हो सकता है। वो हमें यूज़ करना चाहते, पर हम उस योग्य नहीं होते।

हम सुनते रहते हैं कि करनकरावनहार परमात्मा है। हाथ बच्चों का, काम परमात्मा का। इसी रूप में हमने सुना है काम परमात्मा का और नाम बच्चों का। परमात्मा गुप्त रहता है, बच्चों से काम कराके उनका नाम करा देता है। और बच्चे सोचने लगते हैं, मैंने किया। बड़ी सूक्ष्म बात है ना! हम सबने अनुभव भी किया है, अच्छे-अच्छे अनुभव भी हुए हैं हम सबको।

कोई हमें पूछते हैं, हम बीमार हो जाते हैं, डॉक्टर की दवाई काम नहीं आती तो क्या करें? ऐसे में सूक्ष्म व श्रेष्ठ पुरुषार्थी उससे कह देता है कि इस तरह, इस विधि से करो और उसने किया और ठीक हो जाते हैं। वो कैसे हुआ? हमने बताया, उसने विश्वास रखा। बाबा(परमात्मा) की नज़र उसपर पड़ी और वो ठीक हो गया। हमने तो सिर्फ बताया। परमात्मा ने उसे ठीक कर दिया। हमने ठीक नहीं किया। ये सूक्ष्म बात हमें समझ में नहीं आती, पकड़ में नहीं आती। वास्तव में सच तो यही है, परमात्म शक्तियों से ही वो ठीक होता है।

कइयों के काम उलझे हुए हैं, हमने बताया, उनका काम ठीक हो गया। लोग सोचते हैं, इन्होंने ठीक कर दिया। लेकिन इन सबमें परमात्म शक्तियां ही कार्य कर रही होती हैं।

भक्ति मार्ग में एक बात प्रसिद्ध है, लोग किसी भी देवी-देवताओं में भावना रखते हैं, आराधना करते हैं, उन देवी-देवताओं के माध्यम से उनकी कामनाएं पूरी होती हैं। लेकिन वो भी तो परमात्मा के ही बच्चे हैं ना! जैसे कि भक्ति में भी नाम गणेश जी का और काम शिव पिता का। वैसे ही देखा जाये तो माँ-बाप ही बच्चों का काम करते हैं ना! इसी से सम्बंधित श्रीमद्भगवद् गीता में लिखा है, और परमात्मा ने भी बताया है, भक्त जिन-जिन देवताओं में भावना रखते हैं, मैं ही उनके द्वारा उन सभी की मनोकामनाएं पूरी करता हूँ। तो हम सभी इस सूक्ष्म बात को समझ लें कि ये सब कार्य परमात्मा के द्वारा हो रहे हैं।

अब अलौकिक कार्य को भी हम इसी दृष्टि से करें, ऐसी ही भावना रखें तो क्या-क्या होगा? सोचें ज़रा। ऐसी भावना रखने पर बाबा की मदद मिलती रहेगी। अक्सर हमारी भूल यही होती है कि ये मैंने किया। लेकिन वास्तव में बाबा ही करा रहा है। अगर मैं-पन आया, तो बाबा की मदद से हम वंचित रह जायेंगे। करनकरावनहार बाबा है, ये संकल्प अपने सबकॉन्शियस माइंड में उतार दो और निश्चय रखो कि काम बाबा का है, बाबा करा रहा है, मुझे खुद को यश-अपयश के प्रभाव से मुक्त रखना है। इस तरह से मेरा-पन भी हमारे अशांति का कारण बनता है। क्योंकि मेरा है, तो किसी ने उसको टच भी किया तो भी मुझे दर्द होगा। क्योंकि मेरा पन का भाव हमें महान बनने से रोकता है। मैं और मेरा-पन का भाव महान बनने नहीं देता। ये एक ऐसी बीमारी है जो हमें पकड़ में भी नहीं आती, न दिखाई देती। सूक्ष्म पुरुषार्थ की लेबोरेट्री में जब तक न लिया जाये तब तक ये हमें समझ में नहीं आता और हम ऐसे विकृत भाव को लेकर कार्य करते रहते, वहीं समस्याओं को जन्म देते हैं और हम दुःखी होते हैं। तो मैं और मेरापन को सूक्ष्मता से देखें और उसे त्याग दें और परमात्मा करा रहा है, इस संकल्प को बार-बार स्मृति में लाकर सबकॉन्शियस को शक्तिशाली बनायें।

हम मांगने वाले नहीं अधिकारी बच्चे हैं

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

जब मैं किसी के मुख से सुनती हूँ कहते हैं बाबा आप शक्ति देना... मैं कहती शक्ति भी क्यों मांगते! क्या मेरे मांगने से वह देगा! हम मांगने वाले भक्त नहीं हम तो अधिकारी बच्चे हैं। अधिकारी बच्चों के मुख से जब ऐसे बोल निकलते तो मैं यह बोल कानों से सुनना नहीं चाहती। अरे लुटाने वाला कहता तू लूट... जितना चाहे उतना लूट। जितना लूटेंगे-लुटायेंगे उतना भरतू होते जायेंगे। वह सागर है, कोई तालाब नहीं जो सूख जायेगा। ऐसा निरन्तर खुद को स्वमान में रखो, नशे में रहो तो स्थिति कभी डगमग नहीं होगी।

रोज़ सवेरे एक ही धुन लगाओ - मुझे मेरा बाबा मिल गया। यह शिवबाबा की भांग पी लो, घोट-घोट कर नशा चढ़ा दो, बस इसी मस्ती में रहो तो बाकी दुनिया की सब मस्तियां खत्म हो जाएं। मुझे तो कई बार हंसी भी आती तो तरस भी पड़ता - कहते हैं मैं सच कहती हूँ मुझे इतना निश्चय नहीं बैठता। मुझे वह भगवान, वह ईश्वर मिल गया है, यह अन्दर से नहीं आता, मुझे तरस पड़ता है, कहती हूँ बाबा आप कितने न प्यारे हो, लेकिन गुप्त हो। बाबा इनके सामने तू बादल रख क्यों बैठे हो, तो बादलों के बीच आप सूर्य को यह नहीं जान सकते। बाबा को कहती - बाबा इनके सामने से यह बादल हटा दो तो यह देख लें, तू है कौन। तेरी इतनी शक्तियों की किरणें क्यों नहीं यह देखते! क्या इन्हें यह दिव्य बुद्धि नहीं मिली है? वास्तव में यह है सूक्ष्म में अपने देह-अभिमान का नशा, इसलिए सूर्य की शक्ति को पहचान नहीं सकते।

कई बार मन में जो यह संकल्प चलता कि जीवन का सौदा है, मालूम नहीं जीवन चल पायेगी या नहीं, मालूम नहीं मेरा भविष्य उज्जवल रहेगा। सोच समझकर कदम लेना चाहिए। पता नहीं जीवन का कैसा मोड़ आये... वह शादी तो क्या करनी, शादी तो बर्बादी है, बाबा का बनकर रहें तो ठीक है। परन्तु पता नहीं मेरे संस्कार किस तरह के हों, दूसरे

> जितना लूटेंगे-लुटायेंगे उतना भरतू होते जायेंगे। वह सागर है, कोई तालाब नहीं जो सूख जायेगा। ऐसा निरन्तर खुद को स्वमान में रखो, नशे में रहो तो स्थिति कभी डगमग नहीं होगी।

के किस तरह के हों, सर्विस में कदम रखें सफलता न मिले तो... ऐसा न हो इस दुनिया से भी जावें उस दुनिया से भी जावें! दादियाँ तो कहेंगी तुम्हें ब्रह्माकुमारी बनना है। वह तो ठीक है। ब्रह्माकुमारी तो ठीक परन्तु अपने पांव पर तो खड़ा होना चाहिए, कोई का बोझ नहीं बनना चाहिए, मैं सेन्टर पर रहूँ, कभी कुछ चाहिए फिर मांगू... यह तो मेरे से नहीं होगा। किसी के दान से मैं खुद की जीवन कैसे पालूंगी। दूसरे के दान से मैं रोटी खाऊं यह तो मेरे से नहीं हो सकता। मैं कमाऊंगी तो धन तो लग जायेगा... पता नहीं सेन्टर पर रहूँ, फिर आपस में बने, बैठकर मन खराब करूं, इससे तो दूरबाज खुशबाज रहना ही ठीक है, कम से कम परतन्त्र तो नहीं रहूंगी, स्वतंत्र रहना ठीक है। बाबा को ही तो याद करना है। बाबा की मुरली ही तो सुननी है, बाकी यह सर्विस में रहना, झंझटों में आना, इससे तो अपने को न्यारा रखना ही ठीक है। बाबा कहते न्यारे रहेंगे तो प्यारे बनेंगे, इससे ही आपे ही प्यारी बन जाऊंगी। अपनी शान में रहना चाहिए। आज की दुनिया में तो पैसे के सिवाए कुछ भी नहीं है, लोग भी पैसे की इज्जत करते, मैं ब्रह्माकुमारी तो बनी लेकिन पैसा होगा तो इज्जत तो मिलेगी। इसलिए कमाना ठीक है। बहुत हैं जो ऐसी भाषा बोलती हैं। मैं भी कहती हूँ - बिल्कुल ठीक है, सही बात है... लेकिन प्रवृत्ति वालों के लिए तो बाबा ने कहा है तुम दोनों को निभाओ। कुमारियों को किस मुरली में कहा, वह मुरली तो मैंने कभी सुनी नहीं है।

वाणी में आते हुए शक्तिशाली वृत्ति से वायुमण्डल बनाने की सेवा करें

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

जिसके दिल में, मन में रावण की अच्छी वृत्ति है, यह बहुत अच्छे प्रॉपर्टी है उसके दिल में बाबा कम्बाइण्ड कैसे रह सकता है? हम कभी-कभी यह समझते भी हैं कि यह नहीं होना चाहिए लेकिन वो सब समझते हुए भी जो नहीं होना चाहिए, नहीं करना चाहिए वो हो ही जाता है, उसका कारण क्या है? इसका सूक्ष्म कारण यही है कि कम्बाइण्ड रूप से बाबा जो हमको मदद देवे, वो मन में मदद के लिए है ही नहीं। तो बाबा की मदद न मिलने के कारण हम जो चाहते हैं वह कर नहीं पाते। जिस समय कोई गलती होती है तो आत्मा कमज़ोर हो ही जाती है, ऐसे टाइम पर बाबा के कम्बाइण्ड स्वरूप की मदद फायदा देती है। जब हमारे पास कम्बाइण्ड की फीलिंग ही नहीं है तो मदद कैसे मिलेगी। क्योंकि भावना ही वो हो जाती है, समझो वो अच्छा भी करेगा, तो भी मेरे मन में यह भावना है - यह है ही ऐसे, तो हमको उसकी अच्छाई में भी बुराई की ही फीलिंग आयेगी, कुछ भी अच्छा ही नहीं लगेगा।

दादी सबको प्यारी क्यों लगती थी? दादी अगर कोई भी बात देखती थी, दादी के पास किसी की भी रिपोर्ट आ जाए लेकिन दादी मन में कभी भी नहीं रखती थी। तो ऐसे अपने को चेक करो कि हमारी हर आत्मा के प्रति ऐसी शुभ भावना है? उनके निगेटिव कर्म का, वाणी का प्रभाव हमारे मन में तो नहीं है? तो जैसे बाबा की हैण्डलिंग भी ऐसे ही रही प्यार देने की, भले निगेटिव को जानता था लेकिन वो सब जानते हुए भी बाबा की फीलिंग शुभ भावना, शुभ कामना की रहती थी। ऐसे ही हम अपने को चेक करें। वृत्ति से वायब्रेशन होते हैं। किसी के प्रति बहुत अच्छी वृत्ति है, यह बहुत अच्छे पुरुषार्थी हैं, बहुत एक्यूरेट हैं तो हमारे वायब्रेशन उसके प्रति क्या होंगे? तो हमको कौन-सी सेवा अभी करनी चाहिए? हमको भी दादी से प्यार है तो उसका रिटर्न हम क्या देंगे? हम वाणी में आते हुए शक्तिशाली वृत्ति से वायुमण्डल बनाने की सेवा करें।

अभी योग को बहुत शक्तिशाली, ज्वालामुखी बनाना है। जिसमें मन की एकदम एकाग्रता भी हो और दूसरा हर आत्मा के प्रति रहमदिल की भावना इमर्ज हो। तो ऐसे अभी हम लोग अगर ज्वालामुखी योग में बैठे हैं, तो क्या हर आत्मा के प्रति मैं सुख दे रही हूँ, शान्ति की फीलिंग दे रही हूँ, यह संकल्प चलेंगे या सिर्फ हम अपने योग के पॉवरफुल स्टेज में होंगे? सूर्य जब उदय होता है और किरणें देता है तो उन किरणों द्वारा कहाँ पानी को सुखाने की सेवा होती है और कहाँ पानी बरसाने की सेवा करता है, दोनों ही करता है तो क्या सूर्य मन में संकल्प करता है कि मुझे यहाँ सुखाना है, यहाँ बरसाना है? नहीं। ऑटोमेटिकली सूर्य जब उदय होता है और उनकी किरणें फैलती हैं तो जहाँ जो आवश्यकता है, समझो सुखाने के शक्ति की आवश्यकता है, बरसाने की शक्ति की आवश्यकता है, तो जब सूर्य की किरणें निकलती हैं उनसे स्वतः ही वो प्राप्ति होती है। तो हमको भी यह संकल्प करने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन हम मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज पर एकाग्र बुद्धि से स्थित रहें क्योंकि हम अगर एकाग्र नहीं होंगे तो हमारी निर्णय शक्ति काम नहीं कर सकती है। हम कोई भी सही निर्णय तब कर सकेंगे जब हमारा मन-बुद्धि एकदम एकाग्र हो।

ज़रा भी न्यारेपन की कमी है, देह के भान में हैं तो बाबा का प्यार खींच नहीं सकते...

राजयोगिनी दादी जानकी जी

बाबा से हम दृष्टि लेते हैं पर देखें हमारा चरित्र कैसा है? शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा के रथ को लिया सोच समझके, जब बाबा को देखते हैं साकार, अव्यक्त, निराकार तीनों की पहचान है। हर एक बाबा को देख रहा है, बाबा अव्यक्त रूप से गुल्ज़ार दादी के तन में कैसे हमारे सामने अपनी नज़र से निहाल करने आते हैं। बाबा अपनी नज़र से निहाल करने आते हैं। बाबा अपनी नज़र से हमको क्या से क्या भासना देता है। वो मेरा बाबा है, बाबा कहता है तुम मेरे बच्चे हो। टीचर के रूप में कितनी अच्छी पढ़ाई पढ़ा रहा है। पढ़ाई पर जब मनन-चिंतन-मंथन करते हैं तो ज्ञान के एक-एक बोल रत्न के बराबर हो जाते हैं। रत्नों की बहुत वैल्यू होती है।

आत्मा, परमात्मा और ड्रामा। आत्मा की गहराई में जाओ, आत्मा शरीर में होते हुए मैं-पन व देह के भान का अभिमान नहीं है। कैसे बाबा ने देह में होते हुए देहभान से छुड़ा दिया है। अभी बाबा इशारा दे रहा है देह के भान से परे रहो। जब इतने सब लोग शान्ति में शान्त बैठे हैं, सबका अटेन्शन है कि मैं कौन, मेरा कौन... अन्दर से श्वासों-श्वास यह स्मृति रहे मैं कौन? मेरा कौन? बाबा ने आत्मा की समझ दी है फिर यह ड्रामा है, इसमें हर आत्मा का अपना पार्ट है। दो का एक जैसा पार्ट नहीं हो सकता है। यह इतनी अच्छी विधि जो है हरेक का पार्ट अपना है। यह स्मृति, रिगार्ड रखने का अच्छा रिकॉर्ड बना देती है। ड्रामा में हर आत्मा कहाँ से भी आती है चाहे देश, चाहे विदेश से, सब बाबा के बच्चे हैं। जब भी देखते हैं देह भान से परे हैं, सम्बन्ध से न्यारे हैं। न्यारे बनने से बाबा का प्यार खींच लेते हैं। ज़रा भी न्यारेपन की कमी है, देह के भान में हैं तो बाबा का प्यार नहीं खींच सकते हैं। बाबा तो हर आत्मा को घर जाने के लिए रोज़ इशारा दे रहा है कि बच्चे घर चलना है। परमधाम की सब आत्मायें जब नीचे आयेंगी तब यहाँ से जाना शुरू हो जायेगा। हम तो बाबा के साथ पहले जायेंगे इस बात की खुशी है। यहाँ बाबा ने कई आत्माओं से सेवा कराई है, करा रहा है। भगवान है मेरा बाप, सेवा है मेरा भाग्य। यहाँ भगवान है, यहाँ सेवा है। ऐसी श्रीमत बाबा ने हम बच्चों को दी है। जो अपने को मनमत, परमत से फ्री कर दिया है, इस बात की मुझे बड़ी खुशी है। ऐसे जो फ्री हैं वो सच-सच हाथ उठाओ क्योंकि श्रीमत में बहुत पॉवर है, स्वयं भगवान की श्रीमत है। इतना समझाके इशारा देता है, डिटेल में भी समझाता है, इससे ही इतनी सारी सेवायें वृद्धि को पाई हैं।

जब अधर्म का नाश होने वाला है तो हमारे में कोई भी विकर्म रहा हुआ हो तो उसको विनाश के पहले नाश कर दो शंकर के रूप से यानी अशरीरी अवस्था से, लक्ष्य के अनुसार विष्णु समान बनने का पुरुषार्थ करना है। मुझे कमल फूल समान रहना है। अन्दर ही अन्दर यह अभ्यास चलता रहे। बाबा ने मुझे अच्छा कमल का फूल बनाया है, ऐसी किसी को फीलिंग है! दो-तीन दिन से बाबा ने गुणवान बनने पर ध्यान खिंचवाया है। निर्विकारी बनना है, कोई विकार की ज़रा भी अंशमात्र न हो इसके मिसाल बनो। बाबा ने शुरू में दिल्ली, बॉम्बे में ऐसे मिसाल तैयार किये थे क्योंकि बाबा के बोल में शक्ति इतनी है, काम महान शत्रु है। बस, समझा। ज़रा भी अंश मात्र काम की हो तो वो ब्राह्मण नहीं कहला सकता। जिसके अन्दर से काम विकार गया तो उसका क्रोध भी गया। ज़रा भी काम का अंश होगा तो क्रोध भी होगा। चलो काम, क्रोध तो गया, पर लोभ, मोह थोड़ा भी है तो वो बाबा का बच्चा नहीं है। लोभ के साथ बाबा ने इतना अथाह ज्ञान धन जो दिया है, मनी भी दी है तो मान भी दिया है।